शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'होरी' के जीवन की करुण कथा : गोदान

डॉ.सरोज यादव
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द का नाम सर्वोत्कृष्ट है। इसी कारण प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहलाये। हम सभी जानते हैं कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। किन्तु इन्हीं गाँवों के जमींदारों और पूँजीपतियों ने गरीब और ईमानदारी से परिश्रम करने वाले भोले भाले कृषकों का बुरी तरह से शोषण किया है। इसका यथार्थ चित्रण प्रेमचन्द ने गोदान उपन्यास में किया हैं। गोदान प्रेमचंद का ही नहीं बल्कि संपूर्ण हिन्दी उपन्यास जगत का उज्जवलतक प्रकाश पुंज हैं।

भारतीय गाँवों की स्थिति

गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया एक परिवार के रूप में हमारे समक्ष आते हैं, जो भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं और भारत की एक विशेष संस्कृति को सजीव और साकार करते है। ऐसी संस्कृति जिसमें भारत की आत्मा गाँव की मिट्टी की सोंधी सुंगध है। प्रेमचंद ने इसे अमर बना दिया है। इस उपन्यास में उनकी कला चरम उत्कर्ष पर पहुँची है। इसमें भारतीय किसान का सम्पूर्ण जीवन उसकी आकांक्षा और निराशा , उसकी धर्म भीरूता और कर्तव्य परायणता के साथ स्वार्थपरता और बैठकबाजी, उसकी बेबसी और निरीहता का जीता जागता चित्र प्रस्तुत किया गया है। अपने दर्द को सहलाया, क्लेश और वेदना को सहन करता , मर्यादाओं की झूठी भावना पर गर्व करता , ऋणग्रस्तता के अभिशाप में पिसता , तिल तिल काँटों से भरे मार्ग पर आगे बढ़ता है। भारतीय ग्रामीण समाज का यह मेरूदण्ड कितना कमजोर और जर्जर हो चुका है। यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। ग्रामीण कृषक जीवन की सबसे बड़ी समस्या उनका आर्थिक पक्ष है, जिससे वे कभी भी उभर नहीं पाते। दूसरी ओर जमींदार राय साहब, पटवारी रामेश्वरी कारिन्दा नोखेराम , शहरी महाजन के एजेन्ट झिंगुरी सिंह , दातादीन मातादीन धर्म की आड़ में गरीब कृषकों को लूटने वाले ये सभी शोषक वर्ग हैं।

होरी की करुण कथा

प्रेमचन्द ने अपने युग के ग्राम्य महाजनी सभ्यता एवं उसके शिकार होरी परिवार की विपन्नता के बड़े सच्चे चित्र प्रस्तुत किये हैं। शोषक वर्ग , निरंकुश, अधिकार सम्पन्न , वैभव विलास में लिप्त है। इसके विपरित शोषित एकदम विवश निरूपाय, हताश, व्यथित, नंगा-भूखा विपन्नता की चरम पर पहुँचा हुआ है। होरी की एकमात्र गऊ लाने की लालसा दम तोड़ देती है। होरी की अंतिम साँसे जब ऊखड़ जाती है , तब जीवन की लड़ाई लड़ते-लड़ते वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उस समय गोदान के रूप में बीस आने भी छीन लिये जाते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गोदान में ग्राम्य जीवन के एक से बढ़ कर एक सुन्दर और यथार्थ चित्र अंकित हुए हैं। जैसे "लू चल रही है, धरती तप रही है, मगर किसान अपने खलिहान में कार्यरत हैं। कहीं भराई हो रही है , कहीं अनाज ओसाया जा रहा है।"1

इसी प्रकार एक ग्रामीण कृषक के घर का आँखों देखा यथार्थ सजीव चित्र अंकित कर देता है। जैसे "कोने में तुलसी का चबूतरा है , दूसरी ओर ज्वार के कई बोझ दीवार के सहारे रखे हैं। समीप ही ओसारे के पास कुटा हुआ धान पड़ा है , खपरैल पर लौकी की बेल से लौकियाँ लटक रही है। उसारी में गाय बंधी हैं।"2 इस प्रकार उपन्यास में सर्वत्र सरल व निष्कपट ग्रामीण जीवन दिखाई पड़ता है।

इस उपन्यास का सबसे चरम बिंदु होरी की गाय की आकांक्षा का पूर्ण न होना है। यहीं भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी हैं। अतः गोदान में राष्ट्रीय जागरण और संघर्ष का प्रश्न है। प्रेमचन्द मुख्य रूप से शोषित कृषकों की करूण दशा और यथार्थ स्थिति , उसकी समस्याओं को सामने लाना चाहते थे।

वास्तव में अपने कृषक और व्यक्ति दोनों ही रूपों में होरी अत्यन्त सजीव और यथार्थ पात्र है। विभिन्न तत्वों से निर्मित कभी उसका व्यक्तित्व समाज के नियमों से विद्रोह करता है , कभी संस्कारों में उलझ जाता है तो कभी निर्मम शोषण का शिकार होकर परिस्थिति की आँधी में उड़सा जाता है , लेकिन होरी के चरित्र की यह महानता है कि उसमें मानवता हैं। गोदान से वह इतना अभिन्न है कि गोदान होरी की जीवनी अधिक बन गया है, उपन्यास कम।

उपन्यास के अंत में होरी की स्थिति कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त हुई हैं , "होरी खाट पर पड़ा शायद सब कुछ देखता था, सब कुछ समझता था, पर जबान बन्द हो गई थी। हाँ , उसकी आँखों से बहते आँसू बता रहे थे कि मोह का बंधन तोड़ना कितना कठिन हो रहा है। जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा उसी के दुःख का नाम तो मोह हैं"3 यहीं होरी के जीवन की करूण कथा है। अतः होरी एक साधारण व्यक्ति है अपना नेतृत्व स्वयं करता है। उसकी हार में भी विजय का उल्लास है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *गोदान, प्रेमचन्द*
2. *गोदान, प्रेमचन्द*
3. *गोदान, प्रेमचन्द*